

टमाटर की फसल एवं बीज उत्पादन में एक नया विनाशकारी कीट: टुटा एबसोलिऊटा

तनुजा बांश्टु

कीट विज्ञान विभाग, डॉ. यशवंत सिंह पद्मवार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय
नौपी — १७३२३० सोलन हि.प्र.

टमाटर हिमाचल प्रदेश की एक प्रमुख नकदी सब्जी फसल है। टमाटर की खेती पर्वतीय क्षेत्रों एवं मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में ग्रीष्म-वर्षा ऋतु में होने के कारण टमाटर का उत्पादन पूर्ण रूप से मैदानी क्षेत्रों के लिए बैमौसमी होता है। जिससे पर्वतीय व मध्यम क्षेत्रों के किसानों को अधिक लाभ मिलता है।

टमाटर उत्पादन में बीज का स्वस्थ होना बीजोत्पादन की प्रथम सीढ़ी है। स्वस्थ बीज की गुणवत्ता भी अच्छी होती है। टुटा एबसोलिऊटा कीट हिमाचल प्रदेश ही नहीं दुनिया भर में टमाटर फसल एवं बीज उत्पादन में एक गम्भीर समस्या बनकर उभरा है।

भारत में यह पहली बार पुणे महाराष्ट्र में टमाटर की फसल में 2014 में रिपोर्ट किया गया। हिमाचल प्रदेश में 2015 में नौपी वि. विश्वविद्यालय सोलन के वैज्ञानिक डॉ. पी. एल. शर्मा द्वारा रिपोर्ट किया गया। अगर इसे नियंत्रित न किया जाए तो यह 90-100 प्रतिशत तक फसल का नुकसान कर सकता है। यह कीट टमाटर के अतिरिक्त सोलेनेसी परिवार की अन्य प्रजातियों को भी नुकसान पहुंचाने में सक्षम है।

नुकसान:

इस कीट की लार्वा अवस्था ही पूरे पौधे को क्षति पहुंचाती है। हेचिंग के बाद युवा लार्वा पत्ती, शिखर कलियां, फूलों एवं फलों में सुरंग बनाते हैं। पत्ती में सुरंग बनाने के बाद लार्वा मध्यक उत्तक को खाते है। लगातार खाने से ये सुरंग फफोला जैसी बन जाती है जिसके अंदर मल भरा रहता है।

इस प्रकार के लगातार हमले से पौध सूख जाता है। लार्वा पौधे के तने में बहुत गहरी सुरंगें बना देता है जोकि पौधे के विकास को बाधित करता है। लार्वा जब फल पर हमला करता है तो एक पिन्ड के आकार का छेद बना लेता है, जिससे अन्य रोगजनक प्रवेश कर जाते है तथा फल को सड़ा देते है।

जीवन चक्र:

टुटा एबसोलिऊटा एक लेपिडोप्टेरा कीट है। इस कीट का वयस्क 6-7 मिली मीटर लम्बा तथा हल्का सिल्वेरी ब्राउन होता है। पूरा जीवन चक्र लगभग 24-38 दिनों में पूर्ण होता है जोकि सर्दियों में लम्बा हो सकता है। मादा कीट क्रीमी पीले रंग के अण्डे अकेले या समूह में देती है। इसके अण्डे पत्तियों, कलियों, तनों तथा छोटे फल की डंठल पर मिलते है।

प्रत्येक मादा कीट अपने सम्पूर्ण जीवन में लगभग 300 अण्डे देती है। अण्डों से 4-5 दिनों के बाद लार्वा निकलता है। नया लार्वा हल्के पीले एवं हरे रंग का होता है। विकसित लार्वा गाढ़े हरे रंग का होता है।

इस कीट के 4 लार्वा इनस्टार होते है। लार्वा की अवधि 20 दिनों की होती है। प्यूपा मिट्टी में, पत्ती में अथवा सुरंगों के भीतर बनता है। मादा व्यस्क 10-15 दिनों तक तथा नर व्यस्क 6-7 दिनों तक ज़िन्दा रहते हैं। व्यस्क रात में घूमते हैं तथा दिन के समय पत्तियों के बीच छिपे रहते है।

रोकथाम:

1. जैविक नियंत्रण में मकड़ियां एवं अन्य परजीवी जैसे ट्राइकोग्रेमा इस कीट को नियंत्रण में रखने में काफी सहायक होते है।
2. रोगसूचक टमाटर के पौधें तथा फलों के विनाश से इस कीट को नियंत्रित किया जा सकता है।
3. एक ही जगह में टमाटर की निरंतर खेती से बचे।
4. फेरोमोन ट्रेप के उपयोग (15-25 ट्रेप्स/हेक्टेयर) कीट की उपस्थिति का पता लगाने तथा उस की संख्या को नियंत्रित रखने के लिए किया जा सकता है।
5. बेसिलस युरिजिजिंसिस (बीटी) आधारित कीटनाशकों का प्रयोग इस कीट को नियंत्रित करने में किया जा सकता है।
6. नीम से बनी कीटनाशक / 2-3 मिली लीटर/लीटर पानी में बनाकर छिड़काव कर सकते है।